Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MPPSC

राज्य सिविल सेवाएँ

प्रीलिम्स

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग - 9

मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान एवं जनजातियाँ

SIERRA INNOVATIONS

विषय – सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	मध्य प्रदेश का इतिहास	
1.	मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास	1
2.	मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास	10
3.	13-18 वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश	14
4.	1857 का विद्रोह	28
5.	स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान	41
6.	मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक पहलू	45
7.	मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल	77
8.	मध्य प्रदेश के जनजातीय व्यक्तित्व	97
	मध्य प्रदेश का भूगोल	
1.	मध्यप्रदेश का भौगोलिक परिचय	99
2.	मध्यप्रदेश में वन क्षेत्र	103
3.	मध्य प्रदेश में वन्य जीव	108
4.	मध्य प्रदेश का अपवाह तंत्र	111
5.	मध्य प्रदेश के प्राकृतिक भूगोल प्रभाग	121
6.	मध्य प्रदेश में जलवायु, ऋतुएँ और वर्षा	126
7.	मध्य प्रदेश के प्रमुख खनिज संसाधन	129
8.	मध्य प्रदेश की मिट्टी	137
9.	मध्य प्रदेश में परिवहन	141
	मध्य प्रदेश की संवैधानिक व्यवस्था	
1.	मध्यप्रदेश का गठन और निर्माण	147
2.	मध्य प्रदेश की संवैधानिक व्यवस्था	149
3.	मध्य प्रदेश में स्थानीय सरकार	169
4.	संवैधानिक और वैधानिक निकाय	172
5.	मध्य प्रदेश में जातियाँ और जनजातियाँ	196
	मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था	
1.	मध्य प्रदेश में कृषि क्षेत्र	206
2.	मध्य प्रदेश के औद्योगिक और सेवा क्षेत्र	219
3.	मध्यप्रदेश की अन्य महत्वपूर्ण योजनाएँ	227
4.	मध्य प्रदेश की जनसांख्यिकी	231
5.	राज्य बजट एवं आर्थिक सर्वेक्षण	236

मध्यप्रदेश की जनजातियाँ - विरासत, लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य		
1.	मध्यप्रदेश में जनजातियों का भौगोलिक विस्तार, जनजातियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान	250
2.	मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ	252
3.	म. प्र. की विशेष पिछड़ी जनजातियाँ	259
4.	मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति परम्पराएँ, विशिष्ट कलाएँ, त्यौहार, उत्सव, भाषा, बोली एवं साहित्य	264
5.	मध्यप्रदेश की जनजातियों का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान	269
6.	मध्यप्रदेश में जनजातियों से संबंधित प्रमुख संस्थान, संग्रहालय, प्रकाशन	273
7.	मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य	275

इकाई -1 मध्य प्रदेश का इतिहास

Chapter	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024	Topics
1. मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास			1	1	2	1			4	मप्र में महत्वपूर्ण स्थल
2. मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास					1					वाकापति प्रथम राजा भोज का साहित्य विद्याधर धंग देव
3. 13-18वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश	1				1					रानी दुर्गावती, होशंगशाह, बाज बहादुर, वीर शाह बुंदेला दोराहा सराय की संधि
4. 1857 का विद्रोह				2	1		1			झाँसी में विद्रोह, मंडला में विद्रोह नवाब यार मोहम्मद खान सिकंदर जहां बेगम, जयाजीराव सिंधिया, जीवाजीराव सिंधिया
5. स्वतंत्रता आंदोलन में मध्य प्रदेश का योगदान			1					1	1	भारतीय इतिहास से प्रमुख स्वतंत्रता सैनानी
6. मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक पहलू	1	1	1	2	1	3	2	4	4	गणगौर नृत्य, राई नृत्य मनसुखा, तानसेन माखन लाल चतुवेर्दी, कालिदास समारोह
7. मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल			1	3	2	1	2	2		बाघ की गुफाएँ, उदयगिरि गुफाएँ उज्जैन, कजुराहो, साँची का स्तूप
8. मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व				1	1	2			1	पेमा फत्या, भूरी बाई, टांटिया भील गंजन सिंह कोरकू, रानी कमलापति

1 CHAPTER

मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास

- डिंडोरी के **घुघुआ राष्ट्रीय उद्यान** में मिले 6.5 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म ने साबित कर दिया कि मध्य प्रदेश की भूमि उतनी ही प्राचीन है जितनी की दुनिया।
- धार के बाग इलाके में 100 से ज्यादा **डायनासोर के अण्डों के जीवाश्म** मिले है।
  - वैज्ञानिकों ने इन जीवाश्मों के लगभग 7 करोड़ से 6.5 करोड़ वर्ष पुराने होने का अनुमान लगाया है। अंडे के अलावा, क्षेत्र में **डायनासोर के घोंसलों के जीवाश्म** भी पाए गए हैं।
- वर्ष 2003 में एक अमेरिकी वैज्ञानिक ने एक विशाल डायनासोर के जीवाश्म की पहचान की थी, जिसे **"राजसौरस नर्मडेन्सिस"** नाम दिया गया था।
- सन् 1930 में **प्रोफेसर लैडकर** ने साबित किया कि मध्यप्रदेश जुरासिक काल की भूमि है, 1877 ई. में उन्हें जबलपुर के पास **टाइटेनोसॉर डायनासोर** का जीवाश्म मिला।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी **विलियम स्लीमैन** को जबलपुर छावनी क्षेत्र में हजारों हड्डियाँ मिली।
- सन् 1933 में, **मैटली** ने जबलपुर के पास मानव आकार के डायनासोर प्राप्त किये और इनका नाम **जबलपुरिया** रखा।
- भूवैज्ञानिक दृष्टि से, मध्यप्रदेश **गोंडवाना भूमि** का एक भाग है।

मध्यप्रदेश में पाषाण युग (40 लाख ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व)

प्रागैतिहासिक काल

- प्रागैतिहासिक काल- कोई लिखित साक्ष्य नहीं।
- जानकारी का मुख्य स्रोत- पुरातात्विक उत्खनन।
- भूवैज्ञानिक युग, पत्थर के औजारों के प्रकार एवं प्रौद्योगिकी तथा निर्वाह आधार के आधार पर मध्य प्रदेश के पाषाण युग को निम्न में विभाजित किया गया है-
  - **पुरापाषाण युग** (पुराना पाषाण युग): अवधि - 10, 00,000 - 10,000 ईसा पूर्व
  - **मेसोलिथिक युग** (उत्तर पाषाण युग): अवधि - 10,000 - 6000 ईसा पूर्व
  - **नवपाषाण युग** (नव पाषाण युग): अवधि - 6000 - 1000 ईसा पूर्व

पुरापाषाण युग (पुराना पाषाण युग)

- "पुरापाषाण" शब्द 1865 ई. में **जॉन लब्बॉक** द्वारा गढ़ा गया था।
- क्वार्टजाइट से बने पत्थर के औजारों की प्राप्ति के कारण भारत में मानव को **'क्वार्टजाइट' मानव** कहा जाता था।
- वे भोजन संग्राहक और शिकारी थे।
- घरों,मृदभांडों या कृषि का कोई ज्ञान नहीं।
- बाद के काल में उन्होंने आग की खोज की।

 # मध्यप्रदेश में पुरापाषाणिक स्थल

- नरसिंहपुर के पास भूतरा गाँव में वैज्ञानिको को पुरापाषाण युग का हथियार मिला जो मध्यप्रदेश में सबसे पुराना माना जाता है।
- बेतवा और नर्मदा की घाटी से मिली क्वार्टजाइट से बनी हाथ की कुल्हाड़ी।
- नर्मदा घाटी सर्वेक्षण में नरसिंहपुर के होशंगाबाद में प्राचीन जीवाश्म मिले हैं।
- हथनोरा में मानव **नर्मदे नूर्नमेडिस की खोपड़ी** मिली है।
- चंबल घाटी में मंदसौर
- भीमबेटका (रायसेन): विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा खोजा गया।

MPPSC Pre - 2020

मध्यपाषाण काल (मध्य पाषाण युग)

- ग्रीक शब्दों से व्युत्पन्न - 'मेसो' और 'लिथिक'। उर्फ 'मध्य पाषाण युग'
- होलोसीन युग के थे।
- पालतू बनाया जाने वाला प्रथम जानवर - कुत्ते का जंगली पूर्वज।
- भेड़ और बकरियां- सबसे आम पालतू जानवर।
- गुफाओं और खुले मैदानों पर कब्ज़ा करने के साथ-साथ अर्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे।
- वे **मृत्युपरांत जीवन में विश्वास** करते थे और इसलिए मृतकों को खाद्य पदार्थों और अन्य सामानों के साथ दफनाया जाता था।
- लोगों ने जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनना शुरू कर दिया।

 # मध्यप्रदेश में मध्यपाषाणकालीन स्थल

- **आदमगढ़ (होशंगाबाद):** आर.बी.जोशी द्वारा खोजी गयी गुफा शैलचित्र
- भीमबेटका (रायसेन): विष्णु वाकणकर द्वारा खोजी गई 500 गुफाएं
- सिंगरौली: मारा गुफाएं और बाघ गुफाएं (धार)कुंजन
- कुंजन: मध्य प्रदेश के सीधी जिले में स्थित कुंजन एक नवपाषाण स्थल है।

मध्यप्रदेश में नवपाषाण काल

- भारत में नवपाषाण काल 7000 से 4000 ईसा पूर्व के बीच का काल है।
- इसे तीन चरणों में वर्गीकृत किया गया है -
  - चरण- I - कोई धातु उपकरण नहीं मिला।
  - चरण- II - सीमित मात्रा में ताँबे और कांसे के औजार मिले है।
  - चरण- III - इसकी विशेषता लोहे का उपयोग है।
- **होलोसीन युग** की शुरुआत के समय दुनिया के कुछ हिस्सों में कई सांस्कृतिक परिवर्तन होने लगे, जिससे नवपाषाण संस्कृतियों का विकास हुआ।
- हिमयुग की समाप्ति के बाद प्लीस्टोसीन से होलोसीन युग में संक्रमण के दौरान दुनिया के कई हिस्सों में जलवायु में बड़े बदलाव हुए।
- दुनिया भर में गर्म जलवायु शुरू हो गई, जिससे जानवरों और पौधों की आबादी की प्रकृति और उनके वितरण में बदलाव आया।
- इन पर्यावरणीय परिवर्तनों ने नवपाषाण संस्कृतियों को प्रभावित किया और कुछ हद तक नवपाषाणकालीन लोगों के जीवन के तरीकों को निर्धारित किया।
- नवपाषाण शब्द ग्रीक शब्द **'नियो'** जिसका अर्थ है **नया** और **'लिथिक'** जिसका अर्थ **है पत्थर,** से बना है।
- 1865 में सर जॉन लब्बॉक द्वारा गढ़ा गया।
- नवपाषाण संस्कृतियाँ ग्रामीण और कृषि संस्कृतियाँ थीं, लेकिन उन लोगों को धातु उपकरणों का ज्ञान नही था।
- वे पॉलिश किए गए पत्थर के औजारों,उपकरणों और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे।
- नवपाषाण काल में मनुष्य ने **खेती करना** और **जानवरों को पालतू बनाना** शुरू कर दिया।
- उन्होंने अपने लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों को प्रभावी ढंग से संशोधित, नियंत्रित और प्रबंधित करना शुरू कर दिया।
- इन उपायों से उनकी खाद्य सुरक्षा में वृद्धि हुई, लेकिन साथ ही, उनके जीवन के तरीकों में भी बदलाव आया।

 # मध्यप्रदेश में नवपाषाणकालीन स्थल

- **सीधी में कुंजन:** तांबे और कांसे के उपकरण
- **मामा भांजा रॉक शेल्टर** (पचमढ़ी)
- **हटा -** संग्रामपुर, (दमोह)

मध्य प्रदेश में कांस्य युग

- इस समय के दौरान तांबे और निम्न श्रेणी के कांस्य जैसी धातुओं का आमतौर पर उपयोग किया जाता था।
- ताम्रपाषाण या पत्थर-तांबा चरण को पत्थर और धातुओं, मुख्य रूप से **तांबे के उपयोग पर आधारित संस्कृ**ति के रूप में परिभाषित किया गया था।
- उस समय अधिकतर लोग पहाड़ियों और नदियों के पास रहते थे।
- इस काल में **कृषि का विकास** हुआ।
- यह सिंधु घाटी सभ्यता (2700 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व) का समय था।
- उस काल में औजार बनाने के लिए तांबे और पत्थर का उपयोग किया जाता था।
- उस काल में कृषि उपकरणों का भी प्रयोग किया जाता था।
- उस समय लोग बुनाई और कताई से परिचित थे।

 # मध्यप्रदेश में कांस्ययुगीन स्थल

- **एरण (सागर) :** कांस्य युग के औजार मिले थे- 2000 ईसा पूर्व से 700 ईसा पूर्व तक।
- **कायथा (उज्जैन) –** पहला कांस्ययुगीन स्थल
- **खेड़ीनेमा (होशंगाबाद):** 3500 साल पुराना कांस्य युगीन स्थल
- **अकुरा; नागदा (उज्जैन)**
- **महेश्वर-** नवदाटोली (1660 ईसा पूर्व से 1440 ईसा पूर्व): इन दो प्रसिद्ध कांस्ययुगीन स्थलों का उल्लेख बुद्ध के ग्रंथ में मिलता है।
- **त्योंथर (रीवा) और भरहुत (सतना):** तीसरी और चौथी शताब्दी की शहरी सभ्यता मिली।

ताम्रपाषाण युग

State forest Ser. MP -2024

- **कायथा (उज्जैन):** 1800-1300 ईसा पूर्व की अवधि की ताँबे की कुल्हाड़ी; ज्योतिषी वराहमिहिर का जन्मस्थान हैं।
- **एरण (सागर):** प्राचीन नाम अरिकिनी, सबसे पुराना सती का शिलालेख मिला ,ब्लैक-रेडवेयर, पेंटेडवेयर मिला
- **नवदाटोली (महेश्वर) :** गोल आकार की मिट्टी की कुटिया, आयताकार चूल्हा, गेहूँ, चने की खेती।
- **आवरा (मंदसौर):** नवदाटोली के समान, चित्रित लाल-काले और भूरे-सफेद रंग के बर्तन मिले।
- **आजाद नगर-** मुसाखेड़ी (इंदौर): ताम्रपाषाण स्थल।
- **दंगवाड़ा -** यह उज्जैन से 32 किलोमीटर दूर बस्ती में स्थित है**,** यह पिछली शताब्दी की खुदाई के दौरान अस्तित्व में आया था।
- **नागदा -** यह उज्जैन जिले में चंबल नदी के तट पर है। इस ताम्रपाषाण बस्ती से मिट्टी के बर्तन और छोटे पत्थर के हथियार भी मिले हैं।

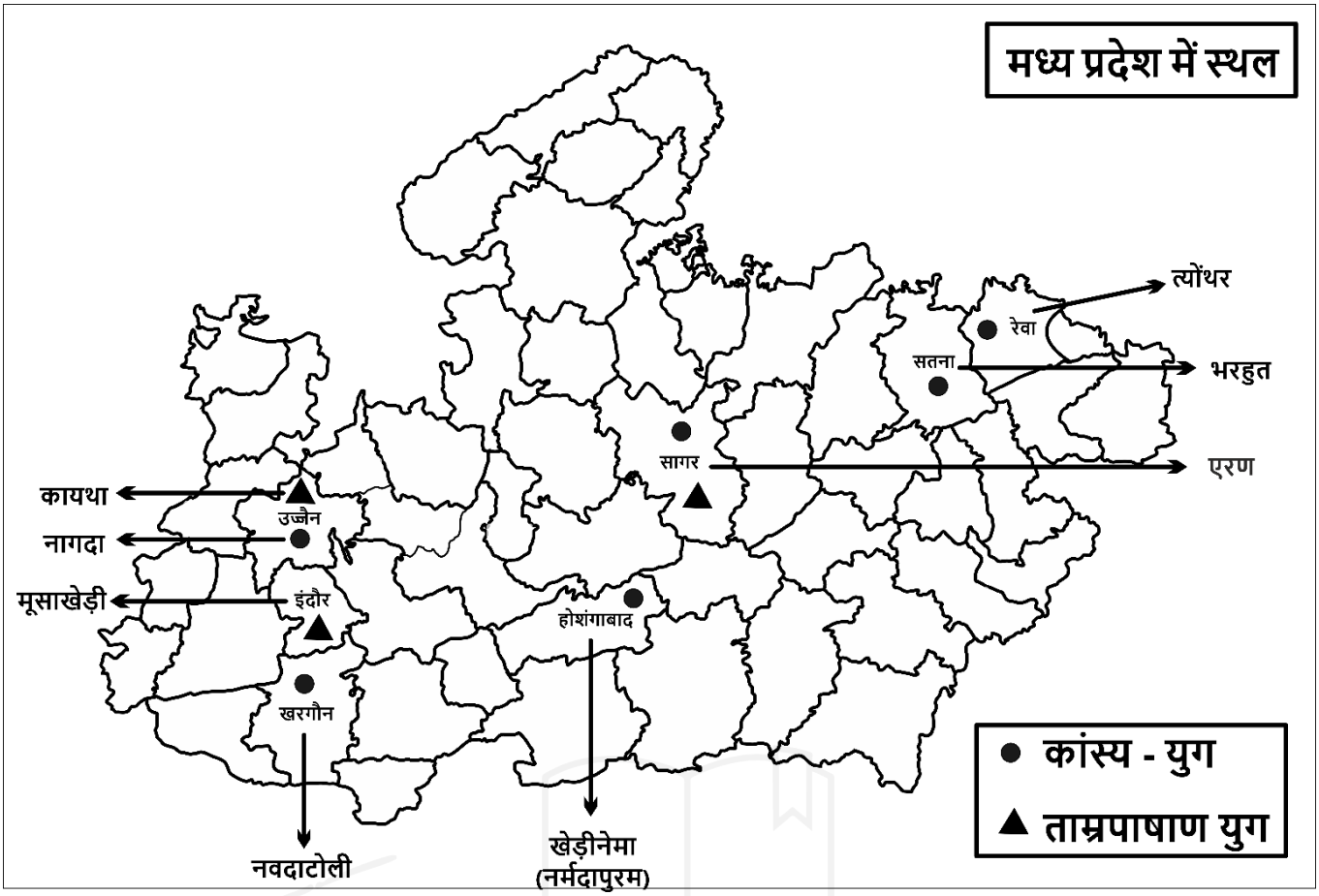

प्रागैतिहासिक काल: लौह युग

- इसी काल में आर्यों का आगमन हुआ और वैदिक काल का प्रारम्भ हुआ।
- जैन और बौद्ध संस्कृतियों का विस्तार हुआ।
- उस काल में महाजनपदों का उदय हुआ।
- सिंधु घाटी सभ्यता के बाद यह गंगा नदी के तट पर पाई गई पहली प्रमुख सभ्यता है।

वैदिक युग

- वास्तव में, आर्य संस्कृति 1500-1000 ईसा पूर्व ऋग्वैदिक काल में उत्तर तक ही सीमित थी।
- उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.) में,इसने विन्ध्याचल को पार कर मध्यप्रदेश में प्रवेश किया।
- मनु के 10 पुत्रों में से एक करुष ने बघेलखंड में **करुष वंश** की स्थापना की।
- **चंद्रवंश -** मनु की पुत्री इला का विवाह सोम से हुआ और उन्होंने इस वंश की स्थापना की। सोम का शासन बुंदेलखंड में था।

इक्ष्वाकु वंश

- मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के नाम से इस वंश की स्थापना हुई, जिसका शासकीय क्षेत्र **दंडकारण्य** था।
- इस वंश के प्रतापी **राजा मान्धाता** ने अपने पुत्र पुरुकुत्स को मध्य भारत के नागा राजाओं (गंधर्वों के विरुद्ध) की सहायता के लिए भेजा।
- उसी वंश के **मचकुंड** ने अपने पूर्वज राजा मान्धाता के नाम पर ऋक्ष और परिपात्र पर्वत श्रृंखलाओं के बीच नर्मदा के तट पर **मान्धाता (ओंकारेश्वर - मान्धाता) शहर** की स्थापना की।

MPPSC Pre - 2020

- विदिशा पर शत्रुघ्न के पुत्र शत्रुघति का शासन था।
  - कालिदास के रघुवंश के अनुसार, शत्रुघन ने यादवों को हराया और अपने पुत्र शत्रुघति को विदिशा के राजा के रूप में स्थापित किया।
- महाभारत युद्ध के दौरान, उज्जैन के राजकुमार बिंद और अनुविंद तथा राजा नील (माहिष्मती) कौरवों की ओर से लड़े थे।
- जबलपुर के पास तेवर को महाभारत में त्रिपुरी के रूप में वर्णित किया गया है।

महाजनपद युग

- महाजनपद सोलह राज्य या कुलीनतंत्र गणराज्य थे जो दूसरे शहरीकरण युग के दौरान छठी से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व तक प्राचीन भारत में फले-फूले।
- इसका उल्लेख **अंगुत्तरनिकाय** और **जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र** में मिलता है।
- वे एक अर्ध-घुमंतू जनजातीय सभ्यता से एक सुव्यवस्थित सरकारी ढांचे वाले कृषि समाज में संक्रमण का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- इनमें से कई "साम्राज्य" एक निर्वाचित राजा के नेतृत्व वाले गणराज्य थे और एक सामान्य सभा और एक बुजुर्ग परिषद द्वारा शासित थे।

अवंती (उज्जैन)

- दीपवंश के अनुसार, राजा अच्युतगामी ने उज्जैन शहर की स्थापना की थी।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी में अपने यात्रा वृत्तांत में **उज्जैयिनी** (उ-शे-येन-ना) का उल्लेख किया है।
- चण्डप्रद्योत महासेन (बुद्ध के समकालीन) के शासन काल में उज्जैन राजधानी **अवंती** और **माहिष्मती** के साथ महाजनपदों का हिस्सा था। **MPPSC Pre - 2019**
- बिम्बसार ने **चण्ड प्रद्योत** को ठीक करने के लिए अपने **वैद्य जीवक** को भेजा।
- शिशुनाग (मगध) ने नंदीवर्मन (उज्जैन के राजा) को हराया और इसे मगध साम्राज्य में मिला दिया।

अवन्ती महाजनपद के अंतर्गत क्षेत्र

- वत्स - ग्वालियर
- चेदि — खजुराहो
- अनूप - निमाड़ (खंडवा)
- अनलपुर - नरवर (शिवपुरी)

चेदि महाजनपद

- राजधानी: सुक्तिमती या सोथिवती, यह बुंदेलखंड का एक हिस्सा थी और खारवेल के तहत कलिंग की एक शाखा थी। बाद में मगध ने चेदि पर कब्जा कर लिया।
- शिशुपाल **चेदि महाजनपद** का राजा था जिसका वध श्री कृष्ण ने किया था। उसके बाद उसका पुत्र धृष्टकेतु चेदि देश का राजा बना।
- महाभारत युद्ध में श्री धृष्टकेतु ने पांडवों का साथ दिया था।
- **वेत्रवती (बेतवा)** चेदि और अवंती महाजनपद के बीच सीमा बनाती है।

महाजनपद के दौरान अन्य क्षेत्र

- दशरना - विदिशा
- टुंडीकर — दमोह

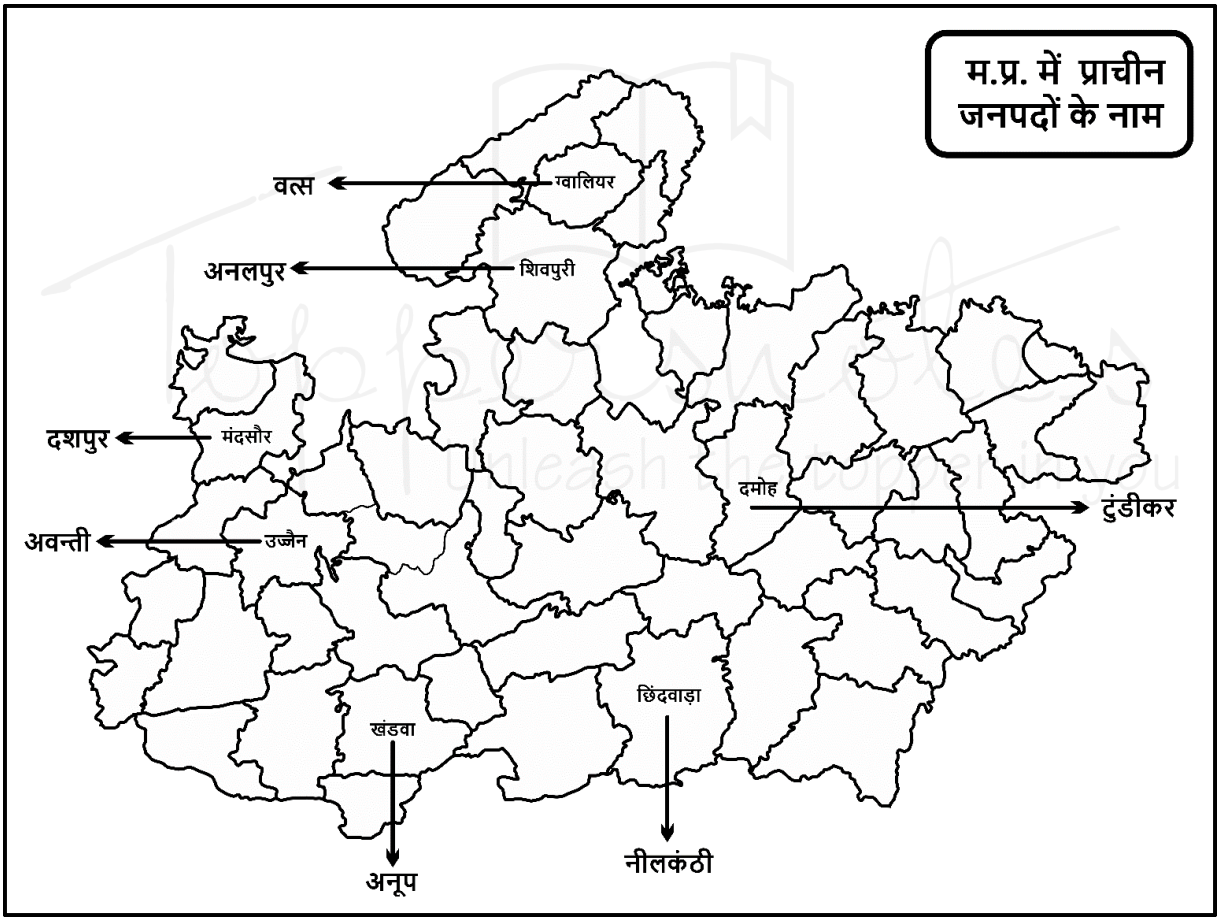

मौर्य राजवंश

- पुरुगुप्त चंद्रगुप्त के शासन के दौरान मालवा क्षेत्र का राज्यपाल था।
- बिन्दुसार द्वारा अशोक को अवंती का राज्यपाल नियुक्त किया गया था।
- अशोक ने उज्जैन पर 11 वर्षों तक राज्यपाल के रूप में शासन किया।
- **गुर्जर** (दतिया), **रूपनाथ** (जबलपुर), **सांची** (रायसेन), **पान गुरड़िया** (सीहोर) के शिलालेखों से साबित होता है कि अशोक ने इन क्षेत्रों पर शासन किया था।
- गुर्जर शिलालेख से अशोक का नाम **देवनामप्रिय राजा अशोक** मिला।
- अशोक ने **बेसनगर** (विदिशा) **की श्रीदेवी/महादेवी से** विवाह किया की। **MPPSC Pre - 2015**

- कुणाल अशोक के चार पुत्रों में से एक थे, उन्होंने उज्जैन में 8 वर्षों तक शासन किया।
- अशोक की मृत्यु के बाद भी, वह प्रांतीय शासक के रूप में कार्य करता रहा। इसके बाद उसका पुत्र सम्प्रति उज्जैन का प्रान्तीय शासक बना।
- सम्प्रति ने धीरे-धीरे दक्षिण चौकी के आस-पास के क्षेत्र को जीत लिया और उस पर कब्जा कर लिया।

मध्य प्रदेश में स्तूप

- **उज्जैन का बौद्ध स्तूप:** बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद अवंती का अधिग्रहण हुआ, जिस पर वैश्य टेकरी में स्तूप बनाया गया। यह अब तक मिले स्तूपों में सबसे बड़ा है।
- **सांची** - यहाँ मुख्य रूप से तीन स्तूप हैं और अन्य छोटे स्तूप भी हैं, सांची को तीसरी शताब्दी में वैदिक गिरि या चैत्यगिरी कहा जाता था और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में **काकवान।**

  MPPSC Pre 2012, 2020
  - सर जॉन मार्शल ने 1912 ई. और 1920 ई. के बीच सांची स्तूप का जीर्णोद्धार करवाया।
  - स्तूप क्रमांक 1 जो बहुत महत्व का बताया जाता है, उसमें सारिपुत्र और महामोगली की अस्थियाँ रखी गई हैं।
- **सतधारा स्तूप** - सांची के पास एक प्राचीन बौद्ध केंद्र। **कनिंघम** ने इसकी खोज 1853 ई. में की थी, अब तक यहाँ 40 स्तूप और 17 विहार मिले हैं।
- **अंधेर का स्तूप** - विदिशा से 12 किलोमीटर दूर अंधेर नामक स्थान से तीन स्तूपों के अवशेष मिले हैं।
- **सोनारी स्तूप** - सांची से 9 किलोमीटर दूर 8 स्तूपों के अवशेष यहाँ मिले हैं, जिनमें से स्तूप नंबर 1 सबसे बड़ा है, जो 240 फीट चौकोर प्रांगण में स्थित है।
  - भोजपुर के स्तूप - विदिशा से 10 किलोमीटर की दूरी पर 37 अवशेष मिले हैं।
  - इसी तरह रायसेन जिले के खरवई से दो स्तूपों और विहारों के अवशेष मिले हैं।
- **भरहुत का स्तूप** मध्य प्रदेश में सतना के पास नागोद में स्थित है, इसकी खोज 1873 ई. में हुई थी।
- **देउर कोठार** रीवा जिले की तहसील के अंतर्गत आता है, जिसे अशोक के समय तीसरी शताब्दी में बनाया गया था।
- **तुमैन स्तूप** अशोक नगर में स्थित है, जो विदिशा और मथुरा को जोड़ने वाले व्यापार मार्ग पर स्थित था। प्राचीन काल में इसे **तुम्बावन** कहा जाता था।
- **कसरावद के स्तूप** : खरगोन जिले में स्थित कसरावद में 11 स्तूप मिले हैं।
- **महेश्वर और नवदाटोली**: महेश्वर की पहचान प्राचीन दक्षिणी अवंती की राजधानी माहिष्मती से हुई है।
  - यह नगर प्रतिष्ठान और उज्जैन के बीच दक्षिणी सड़क पर स्थित था।
- **पान गुरड़िया** से परिक्रमा पथ वाला एक स्तूप मिला है।

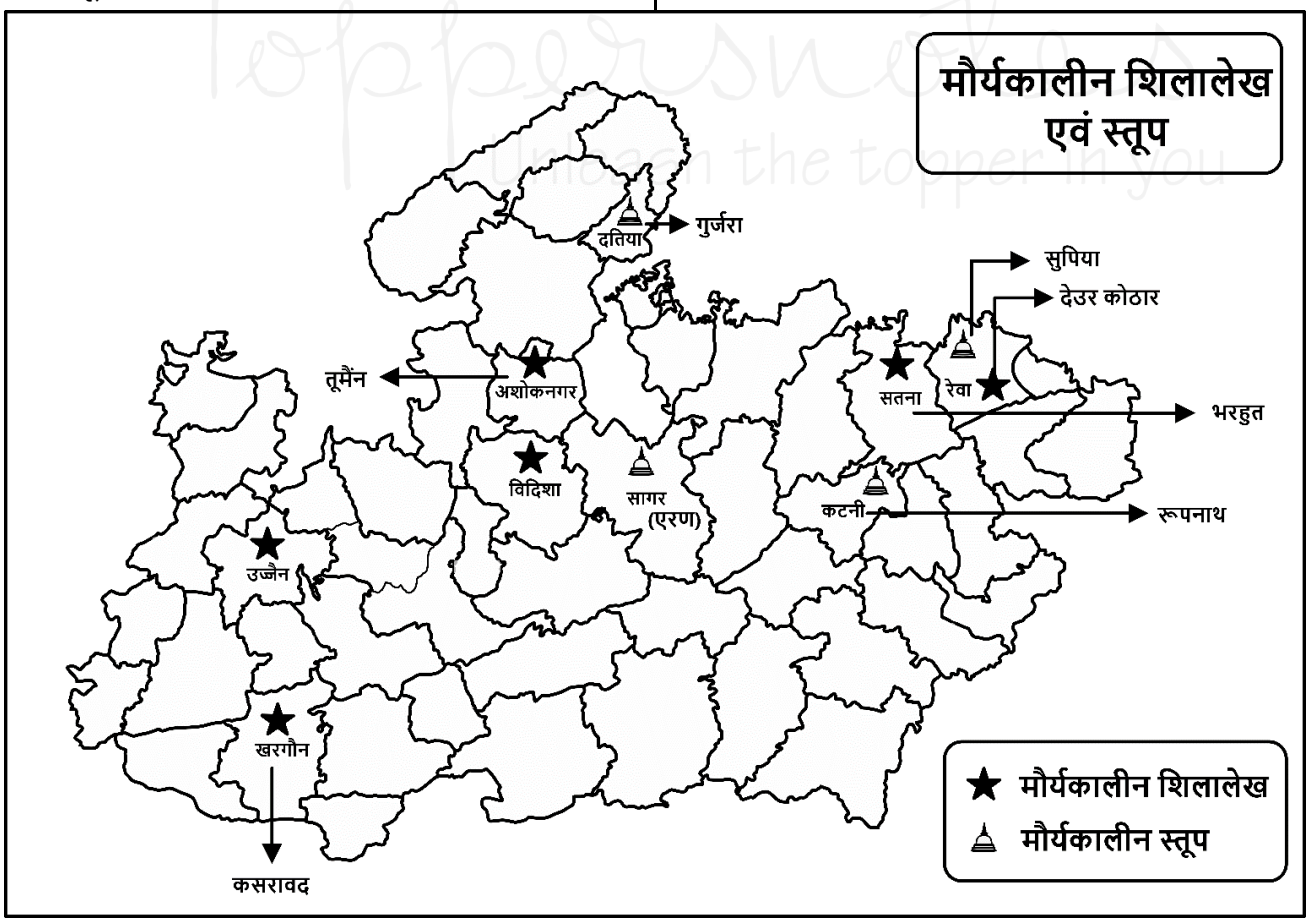

मौर्योत्तर काल

शुंग राजवंश

- **मालविकाग्निमित्रम** के अनुसार, अग्निमित्र ने विदिशा पर अपने पिता पुष्यमित्र शुंग के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया था।
- शुंगों के पूर्वज उज्जैन से आये थे। **MPPSC Pre - 2018**
- राजा भागवत के शासन के दौरान, **हेलियोडोरस** (तक्षशिला के यवन राजा एण्टिआल्कीडस (लगभग 140-130 ई. पू.) का दूत) विदिशा आए और गरुड़ स्तम्भ की स्थापना की यह स्थानीय रूप से **खाम बाबा** के नाम से जाना जाता है।
- भरहुत स्तूप (सतना) शुंग काल के दौरान निर्मित।
- इस दौरान सांची की बाहरी दीवार भी बनाई गई थी।

सातवाहन राजवंश

- सातवाहनों ने कण्व वंश को समाप्त करने से पहले 27 ईसा पूर्व में शासन किया था।
- सांची स्तूप की वेदिका पर उत्कीर्ण अभिलेख से मालवा पर शातकर्णी से पहले के शासन से संबंधित सूचना मिलती है।
- कुछ सातवाहन सिक्के **देवास**, **उज्जैन**, **जमुलिया**, **तेवर**, **भेड़ाघाट** से प्राप्त हुए हैं।
- पुराणों के अनुसार, सिमुक ने पूर्वी मालवा (विदिशा) क्षेत्र पर शासन करने वाले कण्वों और शुंगों की शक्ति को समाप्त करके सातवाहन वंश की स्थापना की।
- शातकर्णी के राज्यों में अनूप (निमाड़), आकर (पूर्वी मालवा) और अवंती (पश्चिम मालवा) शामिल थे।
- सातवाहन का अभिलेख मध्यप्रदेश के सांची से प्राप्त हुआ है।
- उसके पुत्र पुलुमावी की कर्दमन वंश (सीथियन राजवंश) से हार हुई।
- **शातकर्णी प्रथम** को सातवाहन वंश का सबसे शक्तिशाली राजा माना जाता है।

इंडो-यूनानी शासक 200 ईसा पूर्व से 50 ईसा पूर्व तक

- डेमेट्रियस के उत्तराधिकारी, **मिनांडर** (मिलिंद) ने मध्यप्रदेश पर हमला किया इसकी जानकारी उसके बालाघाट के सिक्कों से मिलती है।
- **नागसेन** ने उसे बौद्ध धर्म में परिवर्तित कर दिया।

शक शासन

- शकों ने भारत के पश्चिमी भाग से इंडो-यूनानी शासन की जगह ली और 4 क्षत्रपों अर्थात् पंजाब, मथुरा, उज्जैन और नासिक की स्थापना की।
- शकों की संयुक्त शासन प्रणाली में एक परंपरा थी कि वरिष्ठ शासक "**महाक्षत्रिय**" की उपाधि धारण करता था और अन्य कनिष्ठ शासकों को "**क्षत्रिय**" कहा जाता था।

उज्जैनी क्षत्रप (कर्दमक वंश)

- चष्टन द्वारा स्थापित और बाद में रुद्रदामन द्वारा शासित।
- चष्टन वंश का सबसे शक्तिशाली शासक **नहपान** था।
- वह सातवाहन राजा गौतमी पुत्र शातकर्णी के समकालीन थे।
- चंद्रगुप्त 'विक्रमादित्य' द्वारा अंतिम कर्दमक राजा रुद्रसेन की हत्या की गई थी

गर्दभिल्ल वंश

- उज्जयिनी के राजा गर्दभिल्ल ने पहली शताब्दी ई.पू. शासन किया और इन्होने ही गर्दभिल्ल वंश की स्थापना की
- गर्दभिल्ल आंध्र सातवाहनों के सामंत के रूप में उज्जैन में शासन करते थे।
- गर्दभिल्ल को उज्जैन के महान शासक **विक्रमादित्य का पिता** माना जाता है
- विष्णु पुराण और वायु पुराण में उल्लिखित है कि सात गर्दभिल्ल शासकों का एक परिवार समकालीन शासक राजवंशों में से एक था।
- हिन्दू धर्म के भविष्य पुराण के अनुसार राजा विक्रमादित्य के पिता का नाम गन्धर्वसेन था
- भविष्य पुराण के अनुसार गर्दभिल्ल के पिता देवराज इंद्र थे। दूसरी शताब्दी ई.पू. मे मालवा पर राजा गंधर्वसेन का शासन था| उस वक्त मालवा एक स्वतंत्र राज्य था।
- गर्दभिल्ल के सेनापति का नाम वीरभद्र और मंत्री का नाम विष्णुदत्त था।
- गर्दभिल्ल की पत्नी का नाम वीरमती था। उनके दो पुत्र हुए भर्तृहरि और विक्रमसेन(विक्रमादित्य)।
- भर्तृहरि गर्दभिल्ल के बड़े पुत्र थे जिन्होंने संन्यास धारण कर लिया था
- उज्जैन में भर्तृहरि गुफा स्थित है जो हिन्दू धर्म की आस्था का केंद्र है
- श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार मालवा में गन्धर्व के स्थान पर गर्दभिल्ल का नाम आता है अथवा गर्दभी विद्या जानने के कारण यह राजा गर्दभिल्ल के नाम से प्रसिद्ध हो गया था।
- एक जैन जनश्रुति के अनुसार भारत में शकों को आमंत्रित करने का श्रेय आचार्य कालक द्वितीय (जैन भिक्षु) को है। ये जैन आचार्य उज्जैन के निवासी थे और वहां के राजा गर्दभिल्ल के अत्याचारों से तंग आकर सुदूर पश्चिम के पार्थियन राज्य में चले गए थे।
- इसी सन्दर्भ में यह भी मान्यता है कि गर्दभिल्ल कालकाचार्य द्वितीय की बहन का अपहरण कर लिया था।
- **मेरुतुंगा के विकारसरेनी के अनुसार,** गर्दभिल्ल 74 ईसा पूर्व में सत्ता में आया और 61 ईसा पूर्व में शकों द्वारा पराजित हुआ। लेकिन मेरुतुंगा के कार्यों को आम तौर पर उनके समकालीनों और आधुनिक इतिहासकारों की तुलना में खराब गुणवत्ता वाला माना जाता है

- शकों के राजा नहपान ने मालवा पर हमला कर उस पर कब्जा कर लिया और युद्ध के दौरान उनके पिता राजा गर्दभिल्ल की मृत्यु हो गयी।
- एक अन्य मान्यता के अनुसार गर्दभिल्ल शकवंशी एक राजा का नाम है, जिसका मौर्यकालीन बुंदेलखंड पर अधिकार रहा था।

विक्रमादित्य और गर्दभिल्ल वंश

- गर्दभिल्ल (गंधर्वसेन) के बाद उनके उत्तराधिकारी के रूप में विक्रमादित्य उज्जयिनी के राजा बने जो एक महान शासक थे
- शकों के मालवा मे बीस वर्ष राज करने के बाद विक्रमादित्य ने शकों को हराकर मलावा को शकों से मुक्त कराया। विक्रमादित्य ने धीरे-2 शकों के वर्चास्व को समाप्त करने के लिए एक बड़ी सेना का निर्माण किया।
- अंततः उन्होंने शकों को हरा कर 56 ई.पू.विक्रम संवत की शुरुआत की।

सम्राट विक्रमादित्य का साहित्यिक उल्लेख

- **कालिदास ने सम्राट विक्रमादित्य का उल्लेख "ज्योतिर्विदभरणम"** की एक पुस्तक मे की है| इस पुस्तक को उन्होंने 33 ई.पू. मे लिखा था|
- **श्री कृष्ण मिश्रा ने अपनी पुस्तक ज्योतिषफल-रत्नमाला, (14 ईस्वी) में कहा कि** - "वह विक्रमार्क, सम्राट, मानुस की तरह प्रसिद्ध, जिसने सत्तर वर्षों तक मेरी और मेरे संबंधों की रक्षा की, मुझे एक करोड़ सोने के सिक्के दिए हैं जो सफलता और समृद्धि के साथ हमेशा के लिए फलते-फूलते हैं।
- **कल्हण द्वारा लिखित राजतरंगिणी के तीसरी तरंग में**
- **विक्रमादित्य की पौराणिक कथाएँ** वर्णित है जिसके अनुसार -महाराजा विक्रमादित्य ने मातृगुप्त को अपने जागीरदार राज्य, कश्मीर की संप्रभुता के साथ स्थापित किया साथ ही कश्मीर में मंत्रियों के मंत्रिमंडल ने अपने अधिपति महाराजा विक्रमादित्य को एक संदेश भेजा, और उनसे प्रतिनियुक्ति करने का अनुरोध किया।
- संस्कृत की सर्वाधिक लोकप्रिय दो कथा-श्रृंखलाएं हैं जो कि राजा विक्रमादित्य से सम्बंधित हैं वो है-
  1. **<u>वेताल पंचविंशति</u> या <u>बेताल पच्चीसी</u> ("पिशाच की 25 कहानियां") और**
  2. **सिंहासन-द्वात्रिंशिका ("सिंहासन की 32 कहानियां" जो सिहांसन बत्तीसी के नाम से भी विख्यात हैं)।**

  इन दोनों के संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में कई रूपांतरण उपलब्ध हैं।

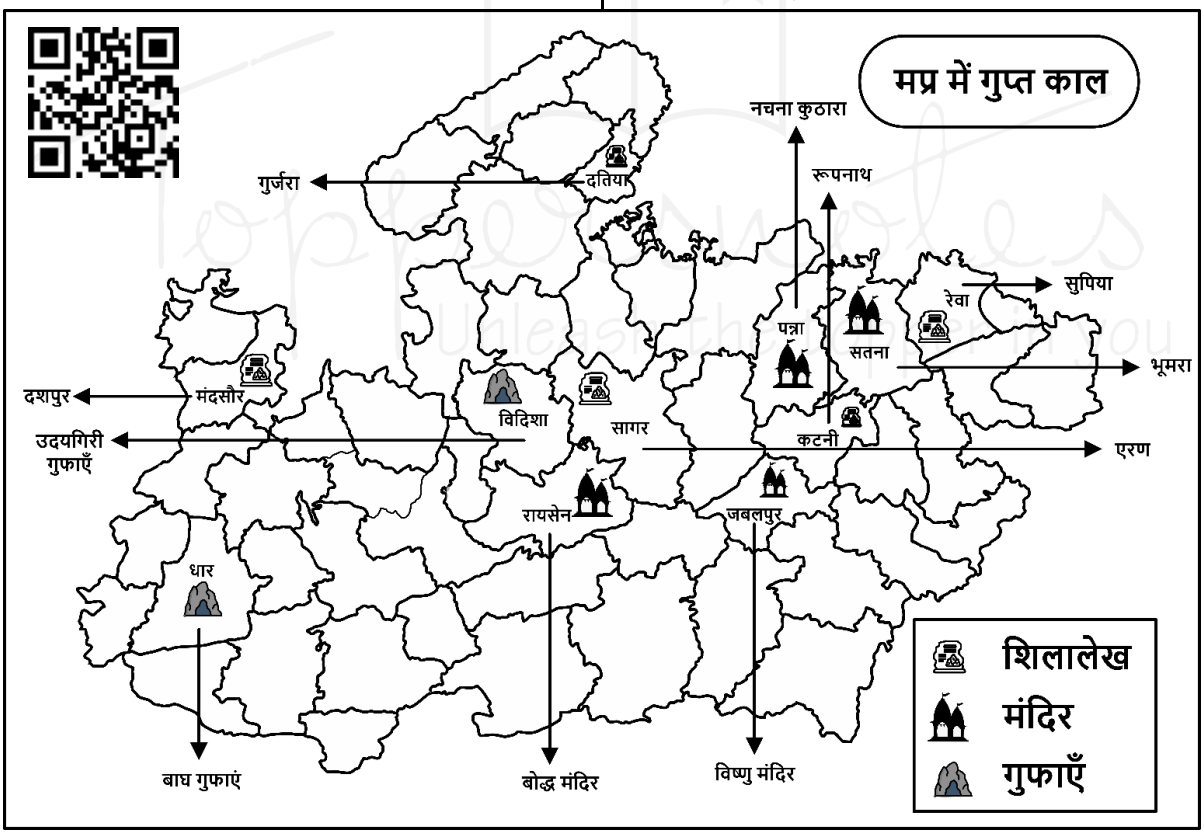

काल

- गुप्त काल के दौरान समुद्रगुप्त ने सागर, दमोह, जबलपुर के माध्यम से दक्षिण की ओर प्रवेश किया तथा उसने शक राजा श्रीधरवर्मन को हराया और सागर में **एरण शिलालेख** अंकित करवाया।
- जिसका प्रमाण उदयगिरि में **जैन गुफा** में मौजूद है, जिसके लेख में महाराजाधिराज राम गुप्त का उल्लेख है, ताँबे के सिक्के पूर्वी मालवा में विदिशा और एरण से प्राप्त हुए हैं।
- विदिशा के निकट दुर्जनपुरा गाँव से चौथी शताब्दी की तीन मूर्तियाँ मिलती हैं, जिन पर महाराजाधिराज रामगुप्त का उल्लेख **ब्राह्मी लिपि** में मिलता है।

- चंद्रगुप्त द्वितीय ने शक राजा को हराया और **उज्जैनी** को अपनी दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित किया।
- प्रथम राजधानी **पाटलिपुत्र** थी।
- उदयगिरि (विदिशा) से प्राप्त शिलालेख से चंद्रगुप्त द्वितीय के वीरसेन (युद्ध और शांति) मंत्री के बारे जानकारी मिलती है।
- उदयगिरि गुफाओं का निर्माण गुप्त राजाओं द्वारा किया गया था, जहाँ वराह अवतार महत्त्वपूर्ण है।
- **धार की बाघ गुफाओं** का संबंध भी गुप्त वंश से है।
- जबलपुर में स्थित **तिगवा गुप्त** काल का एक महत्त्वपूर्ण विष्णु मंदिर है।

गुप्तकाल के अभिलेख

यशोधर्मन का मंदसौर शिलालेख
- शिलालेख मध्य प्रदेश के मंदसौर के पास, जो उस समय सोंदानी नामक एक छोटा सा गाँव था, स्तंभों की एक जोड़ी पर पाए गए थे।
- प्रमुख शिलालेख दो हल्के लाल बलुआ पत्थर के स्तंभों पर पाए जाते हैं।
- यह छठी शताब्दी की शुरुआत में संस्कृत में लिखा गया है।
- इसमें मालवा के राजा यशोधर्मन की **हूण राजा मिहिरकुल पर विजय** का उल्लेख है।
- शिलालेख के अनुसार, यशोधर्मन का प्रभुत्व ब्रह्मपुत्र नदी (असम) से पश्चिमी महासागर (अरब सागर, सिंध) तक और हिमालय (कश्मीर) से महेंद्र पर्वत (या तो ओडिशा, या पश्चिमी घाट में कहीं) तक फैला हुआ था।

तुमैन शिलालेख
- अशोकनगर जिले में स्थित है।
- **कुमारगुप्त** के बारे में जानकारी मिलती है।

सुपिया शिलालेख
- रीवा में स्थित है।
- इसमें घटोत्कच के समय से गुप्त राजा के कालक्रम का वर्णन है।

एरण शिलालेख
- यह सागर जिले में स्थित है।
- **हूणों के आक्रमण** की जानकारी देता है

कुमारगुप्त का मंदसौर शिलालेख
- गुप्त सम्राट कुमारगुप्त द्वितीय से संबंधित यह अभिलेख मंदसौर (दासपुर) से प्राप्त हुआ है।
- यह शिलालेख संस्कृत भाषा में लिखा गया है।
- इसे **विश्व के पहले विज्ञापन** के रूप में माना जाता है।

सांची शिलालेख State Forest Ser. MP. 2024
- इसमें हरि स्वामिनी द्वारा आर्य संघ को दिए गए दान का उल्लेख है।

गुप्त काल के मंदिर

- तिगवा का विष्णु मंदिर - जबलपुर
- भूमरा का शिव मंदिर - नागौद (सतना)
- पार्वती मंदिर नचना कुठार(अजयगढ़ पन्ना)
- बोध मंदिर सांची (रायसेन)
- शिव मंदिर - खोह (नागौद)

अन्य राजवंश

वाकाटक वंश (150 ई. से 450 ई.)

- विंध्यशक्ति (250-270 AD) द्वारा विदिशा में स्थापित।
- महत्त्वपूर्ण **राजा प्रवरसेन** थे जिन्होंने 4 अश्वमेध यज्ञ किए और पवाया (ग्वालियर) के नाग वंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये।
- एक अन्य राजा प्रवरसेन द्वितीय ने **महाकाव्य सेतुबंध** लिखा था।

 # हूणों द्वारा हमला
- 5वीं शताब्दी में हूणों के **नेता मिहिरकुल** ने मध्यप्रदेश के पंजाब से सागर तक विजय प्राप्ति के लिए आक्रमण किये।
- तोरमण के शासन के प्रथम वर्ष के अभिलेख सागर के निकट एरण में उपलब्ध विशाल वराह मूर्ति से मिलते हैं।
- तोरमण के पुत्र मिहिरकुल ने ग्वालियर के आस-पास शासन किया
- मंदसौर के **औलीकर वंश** ने मिहिरकुल को पराजित कर मालवा से खदेड़ दिया।

मंदसौर के औलीकर राजवंश

- दशपुर में जयवर्मन द्वारा स्थापित।
- एक अन्य राजा बंधुवर्मन ने कुमारगुप्त की सर्वोच्चता स्वीकार की।
- नरवर्मन के नाम पर पहला शिलालेख मिला।
- यशोवर्मन ने अंतिम हूण राजा मिहिरकुल को हराया और भारत से हूणों के शासन को समाप्त कर दिया
- मालवा क्षेत्र का नाम औलीकरों द्वारा दिया गया था।

परिव्राजक राजवंश

- परिव्राजक ने पन्ना के पास बुंदेलखंड में शासन किया।
- प्रथम राजा- **देवदया**
- प्रमुख राजा- **हस्तिन**
- हस्तिन के शिलालेख- खोह, जबलपुर और मझगंवा

उच्चकल्प के शासक

- उच्च कल्प का आधुनिक भाग उंचेहरा (सतना) है।
- ये परिव्राजक महाराजाओं के पड़ोसी थे।
- इस वंश के प्रमुख शासकों में ओघदेव, कुमार देव, व्याघ्र देव, जयनाथ और सर्वनाथ थे।

पुष्यभूति राजवंश/वर्धन साम्राज्य MPPSC Pre - 2021

- राजा राज्यवर्धन को मालवा के राजा देवगुप्त ने मार दिया था लेकिन अगले राजा **हर्षवर्धन** ने बदला लिया और नर्मदा के दक्षिणी तट पर देवगुप्त को हराया।

शैल वंश

- आठवीं शताब्दी में महाकौशल के पश्चिमी भाग में शैल वंश की स्थापना।
- राधोली (बालाघाट जिला) से प्राप्त एक ताँबे की प्लेट शैल वंश की वंशावली देती है।
- प्रथम राजा - **श्रीवर्धन**, उसका पुत्र **पत्यु वर्धन** जिसने गुर्जरों पर विजय प्राप्त की।

मौखरी वंश

- मध्यप्रदेश के पूर्वी निमाड़ जिले में, असीरगढ़ किले के महाराज सर्व वर्मन का एक तम्मा मुहर अभिलेख प्राप्त हुआ है, जिसके संबंध में कुछ विद्वानों का मत है कि मौखरी राज्य पूर्वी निमाड़ जिले तक फैला हुआ था।

मैकाल के पांडव वंश

- **अमरकंटक** और वर्तमान अनूपपुर जिले के आस-पास के क्षेत्र को मैकाल के नाम से जाना जाता था।
- पांडव वंश के राजाओं के बारे में जानकारी राजा भरत बल **के बासनी ताम्र पत्र** से प्राप्त होती है।
- पहला राजा- **जयबल**, उसका पुत्र **वत्सबल**।
- बाद में गुप्त वंश की शक्ति कम होने के कारण स्थिति का लाभ उठाकर राजा स्वतंत्र हो गया।
- अंतिम सम्राट – भरतबल

कलचुरी राजवंश

MPPSC Pre. 2022

- कलचुरी हैहय वंश की एक शाखा है, मध्यप्रदेश के प्राचीन इतिहास में कलचुरी वंश का महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- मध्यप्रदेश में कलचुरी वंश की दो प्रमुख शाखाएँ - **माहिष्मती** की कलचुरी और **त्रिपुरी** की कलचुरी शाखाएँ थीं

माहिष्मती का कलचुरी वंश

- इस कलचुरी वंश की प्राचीन राजधानी माहिष्मती थी।
- माहिष्मती में मध्यप्रदेश राज्य के **महेश्वर**, **ओंकारेश्वर मन्धाता** और **मंडला** नामक तीन स्थान शामिल थे।
- इसके तीन प्रमुख राजाओं - कृष्णराज, शंकरगढ़ और बुद्ध राज के नाम मिलते हैं।
- अन्य प्रमुख शासक शंकरगढ़ और बुद्ध राज थे।

त्रिपुरी का कलचुरी वंश

- चालुक्यों द्वारा पराजित होने के बाद, बुद्धराज के वंशज माहिष्मती को छोड़कर चेदि देश में भाग गए और त्रिपुरी में अपनी राजधानी स्थापित की।
- त्रिपुरी शाखा के संस्थापक **वामराज** थे।
- शासक **कोक्कल प्रथम** इस वंश का एक सक्षम और प्रतापी राजा था।
- गंगदेव के पुत्र **लक्ष्मीकर्ण** या **कर्ण देव**, कलचूरि राजाओं में सबसे प्रमुख राजा थे।
- कर्ण देव को **हिंद का नेपोलियन** कहा जाता है।
- कर्ण देव ने जबलपुर के पास अपने नाम पर **कर्णावती शहर** की स्थापना की और अमरकंटक के मंदिरों का निर्माण किया।
- कलचुरी वंश का **अंतिम शासक विजय सिंह** था।

राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूट वंश की दो शाखाएँ सातवीं से दसवीं शताब्दी तक मध्य प्रदेश में रहीं।
- **पहली शाखा**
  - इस वंश की एक शाखा ने **बैतूल**-**अमरावती क्षेत्र** पर शासन किया।
  - राज्य की चार शाखाएँ - दुर्गाराज, गोविंद राज, स्वामीराज और नन्नाराज।
  - तीतर खेड़ी और मुलताई (बैतूल) से नन्नाराज के दो ताम्र पत्र प्राप्त होते हैं।
  - दंतिदुर्ग ने अपने शासन काल में इस शाखा का विलय किया होगा।
- **दूसरी शाखा**
  - इसका शक्तिशाली राजा **दंतिदुर्ग** (744 ई.) था।
  - उन्होंने महानदी और नर्मदा के आस-पास कई युद्ध लड़े।
  - उज्जैन के गुर्जर शासकों ने राष्ट्रकूटो को हराया और शासन किया।
  - उन्होंने लगभग 750 ई. में उज्जैन में हिरण्यगर्भ यज्ञ करके खुद को स्थापित किया।
  - दंतिदुर्ग के उत्तराधिकारी कृष्ण ने मध्य प्रदेश के पूरे मराठी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- **नागभट्ट प्रथम** द्वारा इस वंश की स्थापना की गयी थी।
- इसने अरबों को हराया और मालवा को मुस्लिम आक्रमण से बचाया
- यह दंतिदुर्ग द्वारा पराजित हुआ।

नाग वंश

- नाग वंश का उदय ग्वालियर-विदिशा क्षेत्र में हुआ,
- पुराणों में विदिशा में शासन करने वाले नाग-वंश के राजाओं में शेषा, भोगिन, सदाचंद्र, धन धर्म, भुतानंदी, शिशु नंदी और यशोनंदी का उल्लेख है।
- दूसरी शताब्दी ई. के अंतिम चरण में, विदिशा ग्वालियर क्षेत्र के एक नए नाग वंश का उदय हुआ।
- संस्थापक-**वृषनाग,** जिसका एक सिक्का विदिशा से निकला है
- वृषनाग के बाद, भीमनाग शासक था, जिसने अपनी राजधानी को विदिशा से पद्मावती (ग्वालियर) स्थानांतरित कर दिया।
- इस वंश के अंतिम शासक गणपतिनाग को गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने पराजित कर नाग वंश का अंत किया था।

बोधि और मेघराज वंश

- दूसरी-तीसरी शताब्दी ई. में, वर्तमान तेवर (जबलपुर) के त्रिपुरी क्षेत्र पर बोधि वंश के राजाओं का शासन था।
- त्रिपुरी की खुदाई से प्राप्त मिट्टी-मुद्रा अंकन में चार शासकों- **श्री बोधि, वासु बोधि, चंद्र बोधि और शिव बोधि** के नामों का उल्लेख है।
- इस समय के आस-पास मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र पर मेघवंश के शासकों का शासन था।
- इस वंश का प्रथम शासक **भीमसेन** था।
- कौशाम्बी और भाटा के अलावा बाँधवगढ़ जिले के उमरिया से माघ वंश के शासकों के सिक्के, मुहर और शिलालेख प्राप्त हुए हैं।

2 CHAPTER मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

मालवा का परमार राजवंश

- परमार अभिलेखों में परमारों की उत्पत्ति **ऋषि वशिष्ठ** द्वारा '**आबू पर्वत**' पर आयोजित यज्ञ वेदी से हुई बताई गई है।
- अन्य अभिलेख - 'उदयपुर प्रशस्ति', 'नागपुर प्रशस्ति', 'वसंतगढ़ अभिलेख', 'पट नारायण अभिलेख', 'जैन अभिलेख'

उपेंद्र

- उन्हें राष्ट्रकूट सम्राट गोविंद-तृतीय द्वारा शासक नियुक्त किया गया था।
- '**उदयपुर प्रशस्ति**' में उनकी प्रशंसा की गई।
- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाकर वह '**अवंती**' **के शासक** बने।
- 814 ई. में **गोविंद तृतीय** की मृत्यु हो गई, जिसका लाभ उठाकर इन्होंने राज्य का विस्तार करना शुरू कर दिया और **मालवा पर अधिकार** कर लिया।

वैर सिंह

- उपेंद्र के पुत्र वैर सिंह उनके अगले उत्तराधिकारी बने।
- परमारों की प्रारंभिक राजधानी **उज्जैन** थी, लेकिन वैर सिंह द्वितीय के शासनकाल के दौरान, परमारों ने अपनी राजधानी को उज्जैन से **धार** में स्थानांतरित कर दिया।
- मालवा के परमार वंश के सियक प्रथम का नाम **उदयपुर प्रशस्ति** में मिलता है।
- सियक प्रथम के बाद 893 ई. तक उदयपुर प्रशस्ति में किसी राजा का उल्लेख नहीं मिलता।

कृष्णराज या वाक्पति I

- यह प्रतिहार नरेश **महेंद्र पाल** (892-908 ई.), **भोज II** और **महिपाल** (912-942 ई.) तीनों के समकालीन थे।
- इनका नाम 'उदयपुर प्रशस्ति' और 'नवसहसांकचरित' दोनों में वर्णित है।
- वाक्पतिप्रथम ने '**परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर**' की शाही उपाधि धारण की।

वाक्पति II या मुंज या उत्पल (974 से 994 ई.)

- **सिंधुराज** (997-1000 ई.) - यह मुंज का छोटा भाई था, लेकिन मुंज को सिंधु राज के पुत्र भोज से अधिक लगाव था इसलिए उसे राजकुमार के रूप में नियुक्त किया।
- सिंधुराज ने नवसहसांक, नवीनसहसांक, कुमार नारायण, अवंतीश्वर, परमार महाभारत, मालव राज की उपाधि धारण की।
- सिंधुराज ने हूणों पर विजय प्राप्त की। **बड़नगर प्रशस्ति** (1151 ई.) में इसका विशेष उल्लेख मिलता है।

हर्ष / सियक II

- उन्हें "सिन्ह दत्त भट्ट" भी कहा जाता था।
- परमार वंश का पहला स्वतंत्र राजा **सियक द्वितीय** था।
- राष्ट्रकूट दक्षिण में केंद्रित थे और चोल संघर्ष में व्यस्त थे।
- ऐसे समय का लाभ उठाकर सियक द्वितीय ने तुरंत 949 ई. में 'महाराजधिराजपति' और 'महामंडलिक चूड़ामणि' की उपाधि धारण की
- नवसहसांकचरित' में 'सियक द्वितीय' की विजयों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। उसने हूणों को भी पराजित किया।
- 'हूणमंडलिक' की स्थिति परमार और चेदि वंश के राज्यों के बीच यानी नर्मदा के उत्तर में आधुनिक 'होशंगाबाद' और 'महू' के बीच थी।
- चंदेल के **खजुराहो शिलालेख** (956 ई.) से पता चलता है कि यशोवर्मन चंदेल ने मालवा राजा को पराजित किया।
- इस समय चंदेल का साम्राज्य विदिशा तक फैल गया और वह मालवा की सीमा में प्रवेश कर गया।
- सीयक ने अंतिम काल में राष्ट्रकूटो की राजधानी 'मान्यखेत' पर अधिकार कर लिया।

राजा भोज (1000-1055 ई.)

- वह कला और संस्कृति के महान संरक्षक थे।
- भोजपुर शिव मंदिर का निर्माण किया।
- धार में संस्कृत सीखने के लिए **भोजशाला** खोली।
- इन्होंने चंदेल राजा विद्याधर पर हमला किया, लेकिन 1008 ई. में हार गये।
- भोज ने मोहम्मद गजनवी के खिलाफ हिंदुशाही राजा आनंदपाल की मदद की।
- 1047 में, चालुक्य राजकुमार सोमेश्वर प्रथम ने भोज को हराया और धार को लूट लिया, जिसपे जल्द ही पुनः कब्जा कर लिया गया।
- उन्होंने भोपाल में **भोजताल झील** का निर्माण कराया।
- फरिश्ता के अनुसार राजा वर्ष में दो बार भोज का आयोजन करता था, जो 40 दिनों तक चलता था।
- रोहक इसके प्रधान मंत्री थे और कुलचंद्र, शाहद तथा सुरादित्य उनके तीन महान सेनापति थे।
- **कवि धनपाल** राजा भोज के समय में था। **MPPSC Pre - 2020**

राजा भोज के साहित्य

- तत्त्व प्रकाश; समरगढ़-सूत्रधार, सिद्धान्त संग्रह
- अंतिम परमार राजा महलदेव था जो आइन-उल-मुल्क द्वारा 1305 ई.में पराजित हुआ।
- राजा भोज के बाद जयसिंह प्रथम, उदयादित्य, लक्ष्मदेव, नर्मदेव, यशोवर्मन, जयवर्मन, परमार महा कुमार आदि राजा बने।
- इसके बाद परमार साम्राज्य कई छोटे टुकड़ों में विभाजित हो गया, अंतिम राजा भोज द्वितीय था, जिसके बाद वर्ष 1305 की तारीख मालवा में **महलकदेव** के शासनकाल के रूप में जानी जाती है।
- सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने मालवा पर आक्रमण किया और उसे दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

साहित्य, कला और वास्तुकला

- वाक्पति द्वितीय मुंज एक कवि-हृदय राजकुमार थे, यशोरुपवलोक के लेखक धनिक, **नवसाहसांकचरित** के लेखक पद्मगुप्त, **दशरुपक** के लेखक धनंजय, उनके दरबार में रहते थे।
- राजा मुंज को **कविवृष** भी कहा जाता था।
- भोज कालीन या भोज के नाम से उपलब्ध ग्रंथों की सूची हाल ही में भगवती लाल राजपुरोहित की पुस्तक भोजराज में प्रकाशित हुई थी जो इस प्रकार है
  1. **साहित्य शास्त्र:** सरस्वती कंठाभरण, श्रृंगार प्रकाश
  2. **साहित्य:** चंपू रामायण, श्रृंगार मंजरी कथा, सुभाषित प्रबंध, विद्या विनोद, शालिकथा, अवनिकुर्मसतर्क, कोदण्डकाव्य, महाकाली विजय, वाग्यदेवी स्तुति
  3. **व्याकरण:** प्राकृत व्याकरण, सरस्वती कंठाभरण
  4. **कोष:** नम्मलिका, अम्खायाख्या, अनेकार्थकोश
  5. **संगीत:** गीत प्रकाश
  6. **इतिहास :** संजीवनी
  7. **दर्शन:** न्यायवार्तिक - तत्व प्रकाश, सिद्धान्त संग्रह, सिद्धान्त सार विधि, राज मार्तंड, योग सूत्र वृत्ति, शिव तत्व रत्न कालिका, तत्व चंद्रिका
  8. **खगोल विज्ञान और ज्योतिष:** आदित्य प्रताप सिद्धान्त, राजमार्तंड, राजमृगक, विद्वज्ञानवल्लभ (प्रश्न विज्ञान)

कच्छपघात राजवंश

- कच्छपघात वंश मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग का एक महत्त्वपूर्ण राजवंश था।
- इसका मूल स्थान गोपाचल क्षेत्र है जिसके अंतर्गत मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मुरैना, भिंड, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर और दतिया जिले के क्षेत्र शामिल हैं।
- अतीत में, कच्छपघात **गुर्जर प्रतिहार वंश के सामंत** के रूप में कार्य करते थे।

देव वर्मन

- ग्वालियर में **तोमर राज्य की** स्थापना की।
- चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, जीत महल, जैत या जीत स्तंभ का निर्माण करवाया।
- कीर्तिपाल के शासन काल में बहलोल लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया।
- **राजा मानसिंह तोमर वंश** का सबसे शक्तिशाली राजा था।
- राजा मानसिंह को अपने शासनकाल में बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी के आक्रमणों का सामना करना पड़ा था।
- 1517 ई. में, इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और ग्वालियर का किला जीता, इस युद्ध में राजा मानसिंह की मृत्यु हो गई।
- राजा मानसिंह द्वारा अपने शासनकाल में बनवाया गया मान **मंदिर और गुजरी महल** इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।
- मान सिंह के पुत्र **विक्रमादित्य तोमर** वंश के अंतिम शासक थे।
- पानीपत के पहले युद्ध में इब्राहिम लोदी के साथ विक्रमादित्य मारा गया था।
- इस प्रकार ग्वालियर राज्य के तोमर वंश का अंत हो गया।
- कोहिनूर नाम का विश्व प्रसिद्ध हीरा जो वर्तमान में इंग्लैंड के महल को सुशोभित करता है, ग्वालियर के तोमर वंश के खजाने का हिस्सा था।
- यह तोमर जागीरदार अजीत सिंह द्वारा विक्रमादित्य के बाद मुगल वंश को आगरा किले और खुद पर हमला न करने की शर्त के रूप में दिया गया था।

मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश और उनके क्षेत्र			
राजवंश	**क्षेत्र**	**राजवंश**	**क्षेत्र**
चंदेल राजवंश	बुंदेलखंड	नागवंश	विदिशा - ग्वालियर
तोमर राजवंश	ग्वालियर	बोधि राजवंश	जबलपुर (त्रिपुरी/तेवर)
परमार राजवंश	मालवा (धार)	माघ राजवंश	बघेलखंड
बुंदेल राजवंश	बुंदेलखंड	अमीर राजवंश	अहिश्वश (विदिशा/झाँसी)
होल्कर राजवंश	मालवा (इंदौर)	वाकाटक वंश	विंध्य प्रदेश
सिंधिया राजवंश	ग्वालियर	औलिकर राजवंश	दासपुर (मंदसौर)
करुष राजवंश	बघेलखंड	मौखरी वंश	मालवा (दासपुर, मंदसौर)
चंद्र राजवंश	बघेलखंड से बुंदेलखंड	परिव्राजक राजवंश	बुंदेलखंड
यादव वंश	चंबल बेतवा की नदियों का मध्य भाग	शैल राजवंश	महाकौशल
शुंग राजवंश	विदिशा	पांड्य राजवंश	मैकाल प्रदेश (अमरकंटक)

चंदेल राजवंश

- राजधानी: खजुराहो
- स्थापना: 871 ई.
- **चंद्रोदय ऋषि** के वंशज
- पहला राजा: **नन्नुक**
- नन्नुक के पोते जयसिंह के नाम पर इसका नाम **जेजाकभुक्ति** रखा गया।
- **हर्षदेव** चंदेल वंश के पहले महत्त्वपूर्ण राजा थे, जिनके शासन काल में चंदेल वंश को उत्तर भारत के शक्तिशाली राजवंशों में गिना जाता था।
- हर्षदेव (905 से 925) के बाद उनका पुत्र यशोवर्मन गद्दी पर बैठा, जिसने कन्नौज के प्रतिहारों को समाप्त कर **राष्ट्रकूट से कालिंजर** का किला जीत लिया।
- यशोवर्मन (लक्ष्मणवर्मन) ने खजुराहो के प्रसिद्ध **विष्णु मंदिर** का निर्माण कराया।

धंग देव (950 से 1007)

MPPSC Pre 2017

- प्रतिहार शक्ति के कमजोर होते ही इसने एक स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी। **धंगदेव** ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- उसका राज्य कालिंजर से मालव नदी (बेतवा), मालव नदी से कालिंदी, कालिंदी से चेदि और चेदि से गोपरादी (ग्वालियर) तक था।
- इसने शुरू में कालिंजर को अपनी राजधानी बनाया, फिर खजुराहो को अपनी राजधानी बनाया।
- इसने भटिंडा के शाही शासक जयपाल को सुबुक्तगीन के खिलाफ सैन्य सहायता भेजी।
- धंग ने खजुराहो के अधिकांश मंदिरों का निर्माण कराया, इसने जैन समुदाय के लोगों को खजुराहो में मंदिर बनाने की अनुमति भी दी।
- खजुराहो में दो प्रमुख - **पारसनाथ** और **विश्वनाथ मंदिर** हैं।
- उनके शासनकाल के दौरान, राजा धंग द्वारा खजुराहो में जगदंबी नामक वैष्णव मंदिर और चित्रगुप्त नामक सूर्य मंदिर का निर्माण किया गया था।
- उन्होंने प्रयाग में गंगा-यमुना के पवित्र संगम में अपना शरीर त्याग दिया।

विद्याधर (1017 से 1029 ई.)

MPPSC Pre 2021

- महमूद गजनी की महत्वाकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया।
- परमार शासक भोज और त्रिपुरी कलचुरी शासक **गांगेयदेव** भी पराजित हुए।
- विद्याधर के बाद उसका पुत्र **विजयपाल** गद्दी पर बैठा, लेकिन बाद में उसे गांगेयदेव की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।
- इस वंश का अंतिम शासक **परमर्दिदेव** (1165 ई. से 1203 ई.) था।
- उन्होंने **दशैन दहपति** की उपाधि धारण की।
- उन्हें 1182 ई. में पृथ्वीराज चौहान और 1203 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने हराया था।
- कालिंजर के युद्ध में परमर्दिदेव की मृत्यु हो गई।
- **आल्हा और उदल** परमर्दिदेव के दरबारी थे।

तोमर वंश

- ग्वालियर के तोमर राजाओ का मूल स्थान तँवरघर (मुरैना के आसपास का क्षेत्र) था।
- **ग्वालियर के तोमर वंश की स्थापना**- 1394 ई.
- **संस्थापक**- वीरसिंह देव
- वीरसिंह देव
  - वीरसिंह देव ने 'वीरसिंह व लोक' नामक ग्रंथों की रचना की।
  - वीरसिंह देव को सुल्तान अलाउद्दीन सिकन्दरशाह ने गोपांचल गढ़ (ग्वालियर) का प्रशासक नियुक्त किया था।
  - वीरसिंह देव के बाद कई तोमर शासको ने शासन किया किन्तु इनमे सबसे ज्यादा प्रसिद्धि मानसिंह तोमर को प्राप्त हुई

- उद्धरणदेव(1400-1423ई.)
- गणपति देव (1423-1425 ई.)
- डूंगरसिंह (1425-54ई.)
- कीर्तिसिंह (1459-1480ई.)
- कल्याणमल (1480 1486ई.)
  - इन्हें भूपमुनि कहा जाता था
  - इन्होने सुमेलचित नामक ग्रंथ की रचना की
- मानसिंह तोमर(1486-1516ई.)
  - मानसिंह तोमर इस वंश का सबसे प्रतापी राजा राजा था।
  - मानसिंह ने ग्वालियर के किले में मान मंदिर, सास-बहू का मंदिर तथा गुजरी महल का निर्माण करवाया था।
  - संगीत के प्रमुख ग्रंथ मान कुतूहल की रचना मानसिंह ने की थी ।
  - मानसिह द्वारा सिंचाई के लिए अनेक झीलों का निर्माण करवाया गया था।
  - 1500ई. में मानसिंह ने अपने प्रतिनिधि निहालसिंह को सिकंदर लोदी के दरबार मे भेजा था।
  - 1517ई. में इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण कर यहाँ का किला जीत लिया इस युद्ध मे मानसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ।
  - प्रसिद्ध उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा ने अपने उपन्यास मृगनयनी में मानसिंह और उनकी रानी मृगनयनी का चित्रण किया है।
  - मानसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विक्रमादित्य गद्दी पर बैठा जो तोमर वंश का अंतिम शासक था।
  - विक्रमादित्य पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में मारा गया।
  - इस प्रकार 125 वर्षो में ग्वालियर राज्य के तोमर वंश का अंत हो गया।

ग्वालियर के तोमर शासकों की सूची

शासको के नाम	शासन वर्ष
वीरसिंह देव	1375-1400 ईस्वी.
उद्धारण देव	1400-1402 ईस्वी.
विराम देव	1402-1423 ईस्वी.
गणपति देव	1423-1425 ईस्वी.
डुंगरेंद्र देव उर्फ डुंगारा सिन्हा	1425-1459 ईस्वी.
कीर्तिसिंह देव	1459-1480 ईस्वी.
कल्याणमल्ल	1480-1486 ईस्वी.
मानसिंह	1486-1516 ईस्वी.
विक्रमादित्य	1516-1523 ईस्वी.

Toppersnotes
Unleash the topper in you